

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक ने दिए टिप्स;

मोटे अनाज 'सांवा' की करें वैज्ञानिक खेती: डॉ. हरीश

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. हरीश चंद्र सिंह ने बताया कि अर्सेचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में सांवा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्रचीन फसल है। यह सामान्यतया अर्सेचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है।

उन्होंने बताया कि सामान्यतया सांवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में सांवा की 'खीर' बड़े चाव से खायी जाती है। पशुओं के लिए इसका बहुत उपयोग है। इसका हर चारा पशुओं को बहुत पसंद होता है। इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाए जाते हैं और इसमें मिलने वाले प्रोटीन की पाचन क्षमता सबसे अधिक (40 फीसदी तक) है। सांवा में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना रेशा, 8 गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा में फास्फोरस पाया जाता है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया



यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है। इसे आंशिक रूप से जलाक्रांत मिट्टी जैसे नदी के किनारे की निचली भूमि में भी उगाया जा सकता है लेकिन इसके लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषण तत्व हो, सर्वाधिक उपयुक्त है। मॉनसून के प्रारंभ होने से पूर्व खेत की जुताई आवश्यक है जिससे खेत में नमी की मात्रा संरक्षित हो सके। मॉनसून के प्रारंभ होने के साथ ही मिट्टी फलटने वाले हल से पहली जुताई तथा दो-तीन जुताईयाँ हल से करके खेत को भली-भाँति तैयार कर लेना अधिक पैदावार के

लिए उपयुक्त होता है। डॉ. हरीश ने बताया कि सांवा की बुवाई की उत्तम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है। मॉनसून के प्रारंभ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए। इसके बुवाई छिटकाव विधि से या कूड़ों में 3-4 सेमी. की गहराई में की जाती है। कुछ क्षेत्रों में इसकी रोपाई करते हैं लेकिन पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सेमी. रखते हैं, लाइन में बुवाई लाभप्रद होती है। पानी के लगाव वाले स्थान पर मॉनसून के प्रारंभ होते ही छिटकाव विधि से बुवाई कर देना चाहिए तथा बाढ़ आने के सम्भवना से पूर्व फसल काट लेना श्रेयस्कर होता है।

खाद-उर्वरक का प्रयोग

डॉ. सिंह ने बताया कि जैविक खाद का उपयोग हमेशा लाभकारी होता है क्योंकि मिट्टी में आवश्यक पोषक तत्वों को प्रदान करने के साथ-साथ जल धारण क्षमता को भी बढ़ाता है। 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद खेत में मॉनसून के बाद पहली जुताई के समय मिलाना लाभकारी होता है। नत्रजन, फास्फोरस व पोटैश की मात्रा 40:20:20 किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम बेहतर प्राप्त होता है। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने की स्थिति में नत्रजन की आधी मात्रा टापड़सिंग के रूप में बुवाई के 25-30 दिन बाद फसल में छिटकाव करना चाहिए। जल भराव की स्थिति में पानी के निकासी की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। निराई-गुड़ाई के जरिए खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ों में ऑक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों की देती है। सामान्यतया दो निराई-गुड़ाई, 15-15 दिन के अंतराल पर पर्याप्त है। पंक्तियों में जाए गए पौधों की निराई-गुड़ाई हँड हो या झील हो से किया जा सकता है। टिकाऊ खेती / मिलवा खेती में भी मोटे अनाजों का बहुत योगदान है और इनसे किसी भी तरह से हानि होने की संभावना नहीं होती है। इस विधि को अपनाकर किसान अच्छी फसल पैदा कर सकते और लाभ भी अर्जित कर सकते हैं।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत दूडे

वर्ष: 12

अंक: 197

देहरादून, शुक्रवार, 16 जुलाई, 2021

पृष्ठ: 08

8 जनमत दूडे

उत्तर प्रदेश

देहरादून, शुक्रवार
16 जुलाई, 2021

असिंचित क्षेत्रों में सांवा का है महत्वपूर्ण स्थान: डॉ हरीश चंद्र सिंह

वैद्यक जीव (जलवायु विभाग)

कानपुर: चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ हरीश चंद्र सिंह ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में सांवा का महत्वपूर्ण स्थान है यह भारत की एक प्राचीन फसल है यह सामान्यतया असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है हल्की नम व उष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है उन्होंने बताया कि सामान्यतया सांवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है उत्तर भारत में सांवा की "धीर" बड़े पाय से छापी जाती है पशुओं के लिए इसका बहुत उपयोग है इसका हरा



घास पशुओं को बहुत पसन्द है इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाये जाते हैं और इसमें पायी जाने वाली प्रोटीन की घनता सबसे अधिक (40 प्रतिशत तक) है डॉ सिंह ने बताया कि सांवा में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73 गुना, वसा 8 गुना, लीह तत्व 1.5 गुना कैल्शियम और दूनी मात्रा में कार्बोहाइड्रेट

पाया जाता है उन्होंने बताया कि सामान्यतया यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है इसे आंशिक रूप से जलसह्य मिट्टी जैसे नदी के किनारे की निचली भूमि में भी उगाया जा सकता है परन्तु इसके लिए बलुई दोमट व दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषण तत्व हों, सर्वाधिक उपयुक्त है मानसून के प्रारम्भ

होने से पूर्व खेत की जुलाई आवश्यक है जिससे खेत में नमी की मात्रा संरक्षित हो सके मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही मिट्टी पलटने वाले हल से पल्लो जुलाई तथा दो-तीन जुलाईयां हल से करके खेत को खली-भौंति तैयार कर लेना अधिक पैदावार के लिए उपयुक्त होता है डॉ हरीश चंद्र सिंह ने बताया कि सांवा की बुवाई की उतम समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए इसके बुवाई फिटकवाँ विधि से या बूड़ों में 3-4 सेमी की गहराई में की जाती है कुछ क्षेत्रों में इसकी रोपाई करते हैं परन्तु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सेमी, रखते हैं लाइन में बुवाई लाभप्रद होती है पानी के लगाव वाले स्थान पर मानसून के प्रारम्भ होते ही

फिटकवाँ विधि से बुवाई कर देना चाहिए तथा बाढ़ आने के सम्भवा से पूर्व फसल काट लेना बेयस्कर होता है। खरपतवार नियंत्रण के बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ों में आवसीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों की देती हैं सामान्यतया दो निराई-गुड़ाई 15-15 दिवस के अन्तराल पर पर्याप्त है पंक्तियों में बाये गये पौधों की निराई-गुड़ाई हैण्ड हो अथवा हथौल हो से किया जा सकता है टिकाऊ होती, मिलाव होती में भी मोटे अनाजों का बहुत योगदान है और इनसे किसी भी तरह से हानि होने की सम्भावना नहीं होती है।

असिंचित क्षेत्रों में मोटा अनाज साँवा, भारत की प्राचीन फसल : डॉ. हरीश

कानपुर। सीएसए के कूलपति डॉ. डीआर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में 16 जुलाई को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. हरीश चंद्र सिंह ने बताया कि असिंचित क्षेत्रों में बोयी जाने वाली मोटे अनाजों में साँवा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्राचीन फसल है। यह सामान्यतया असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। हल्की नम व ऊष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया साँवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में साँवा को खीर बड़े चाव से खाया जाता है। पशुओं के लिए इसका बहुत उपयोग है। इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसन्द है। इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषण तत्व पाये जाते हैं और इसमें पायी जाने वाली प्रोटीन की पाचन क्षमता सबसे अधिक (40 प्रतिशत तक) है। डॉ सिंह ने बताया कि साँवा में चावल से दूना प्रोटीन, 11 गुना चर्मा, 73गुना रेश, 8 गुना लीह तत्व, 1.5गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा में

फास्फोरस पाया जाता है। उन्होंने बताया कि सामान्यतया यह फसल कम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोयी जाती है। इसे आंशिक रूप से जलाकाल मिट्टी जैसे नदी के किनारे की निचली भूमि में भी उगाया जा सकता है।



परन्तु इसके लिए बतुई टोमट व टोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषण तत्व हो, सर्वाधिक उपयुक्त है। मानसून के प्रारम्भ

होने से पूर्व खेत की जुलाई आवश्यक है जिससे खेत में नमी की मात्रा संरक्षित हो सके। मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही मिट्टी फलटने वाले इतल से पहली जुलाई तथा दो-तीन जुलाई/या इतल से करके खेत को

भली-भाँति तैयार कर लेना अधिक पैदावार के लिए उपयुक्त होता है। डॉ हरीश चंद्र सिंह ने बताया कि साँवा की बुवाई की उतम

समय जुलाई के अंतिम सप्ताह तक है। मानसून के प्रारम्भ होने के साथ ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए। इसके बुवाई छिटकवाँ विधि से या क्यूँ में 3-4 सेमी. की गहराई में की जाती है। कुछ क्षेत्रों में इसकी रोपाईं करते हैं। परन्तु पॉक से पॉक की दूरी 25 सेमी. रखते हैं लाइन में बुवाई लाभप्रद होती है। पानी के लगाव वाले स्थान पर मानसून के प्रारम्भ होते ही छिटकवाँ विधि से बुवाई कर देना चाहिए तथा बाहु आने के सम्भलना से पूर्व फसल काट लेना श्रेयस्कर होता है। छति हेक्टेयर 8 से 10 किग्रा. गुणवत्तायुक्त बीज पर्याप्त होता है। खाद एवं जलरक का प्रयोग जैविक खाद का उपयोग हमेशा लाभकारी होता है क्योंकि मिट्टी में आवश्यक पोषक तत्वों को प्रदान करने के साथ-साथ जल धारण क्षमता को भी बढ़ाता है। 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद खेत में मानसून के बाद पहली जुलाई के समय मिलाया लाभकारी होता है। नवजन, फास्फोरस व पोटेश की मात्रा 40/20/20 किग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुपात में प्रयोग करने से उत्पादन परिणाम

बेहतर प्राप्त होता है। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने की स्थिति में नवजन की आधी मात्रा टापडैसिंग के रूप में बुवाई के 25-30 दिन बाद फसल में छिड़काव करना चाहिए। साँवा की खेती में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। परन्तु जब वर्षा लम्बे समय तक रुक गयी हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है। जल भराव की स्थिति में पानी के निकासी की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ों में आक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों को देती हैं। सामान्यतया दो निराई-गुड़ाई 15-15 दिवस के अन्तराल पर पर्याप्त है। पॉकियों में बाये गये पौधों की निराई-गुड़ाई हैण्ड हो अथवा ड्रोल हो से किया जा सकता है। टिकाऊ खेती/मिलवा खेती में भी मोटे अनाजों का बहुत योगदान है और इनसे किसी भी तरह से हानि होने की सम्भावना नहीं होती है।

जन एक्सप्रेस

janexpresslive

लखनऊ, राबिवार, 17 जुलाई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 271, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

असिंचित क्षेत्र में बोई जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है 'साँवा'

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। असिंचित क्षेत्रों में बोये जाने वाले मोटे अनाजों में साँवा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्रचीन फसल होने के साथ असिंचित क्षेत्र में बोई जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है जिसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम होती है। इसका प्रयोग सामान्यतः चावल की तरह किया जाता है उत्तर भारत में साँवा की खीर बड़े चाव से खाई जाती है साँवा में पाए जाने वाले प्रोटीन की पाचन क्षमता सबसे अधिक (40 फीसदी) तक है। यह बात चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में शुक्रवार को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ.हरीश चंद्र सिंह ने बताई। उन्होंने बताया कि साँवा में चावल से दो गुना प्रोटीन, 11 गुना वसा, 73गुना रेशा, 8गुना लौह तत्व, 1.5 गुना कैल्सियम और दूनी मात्रा में फास्फोरस पाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि जुलाई में साँवा की बुवाई के लिए सबसे उत्तम समय है मानसून के शुरुआत में ही इसकी बुवाई कर देनी चाहिए। उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई के



लिए 8 से 10 किलो ग्राम गुणवत्ता युक्त बीज पर्याप्त होता है। इसके लिए जैविक खाद का उपयोग लाभकारी होता है क्योंकि यह मिट्टी को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के साथ-साथ जल धारण क्षमता को भी बढ़ाता है।

पानी के लगाव वाले स्थान पर मानसून के प्रारंभ होते ही छिटकवां विधि से बुवाई करनी चाहिए तथा बाढ़ आने की संभावना से पहले फसल काट लेना उत्तम रहता है। सामान्यतः साँवा खेती में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है परंतु लंबे समय तक वर्षा रुकने पर कुछ पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक होती है। बुवाई के 30 से 35 दिन तक खेत खरपतवार रहित होना चाहिए? उन्होंने बताया कि निराई गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही पौधों की जड़ों में ऑक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैलकर भोज्य पदार्थ एकत्र कर पौधों को देते हैं।